करंट को बेअसर करने वाला यंत्र बनाया

प्रमोद भार्गव

ग्रामीण परिवेश में पले-बढ़े व कम पढ़े-लिखे एक युवक ने ऐसा अनूठा उपकरण तैयार किया है जिसके ज़रिए बिजली का करंट मानव शरीर पर प्रभावहीन रहता है। करंट को मुट्ठी में बंद कर लेने का दावा करने वाला, हकीकत राय शर्मा नामक युवक उत्तर-प्रदेश के मुज़फ्फर नगर का रहने वाला है। मानव शरीर को करंट से बेअसर रखने का संकल्प इस युवक ने शोक के उन क्षणों में लिया था जब उसकी मां की करंट लगने से घर में ही मौत हो गई थी। लेकिन यह देखना अभी बाकी है कि यह आविष्कार हकीकत राय के लिए वरदान बनता है अथवा नहीं।

करंट को मुट्ठी में कैद कर लेने वाला यह चुनौतीपूर्ण आविष्कार किसी भी वोल्टेज के करंट को एक शॉकलेस डिवाइस के माध्यम से बेअसर कर देता है। अब बिजली के झटकों से भयभीत होने की ज़रूरत नहीं है। हकीकत राय ने अपनी इस खोज का पेटेंट कराने की कार्रवाई भी शुरू कर दी है।

मुज़फ्फर नगर के नई मण्डी थाना क्षेत्र के निकटवर्ती गांव मुस्तफाबाद पचैंडा निवासी हकीकत राय ने अपने इस आविष्कार के बाद नई बहस को जन्म दिया है। उसने एक ऐसी शॉकलेस डिवाइस का निर्माण किया है जिससे निकलने वाली विद्युत धारा से सभी काम तो होंगे किंतु करंट नहीं लगेगा और न ही जल्दी से उपकरण खराब होगा।

इस अद्वितीय उपकरण के प्रदर्शन के दौरान उसने पहले अपने ही शरीर के कई अंगों को विद्युत प्रवाहित तारों से छुलाया। फिर जब प्रदर्शन स्थल पर मौजूद लोगों के बीच विश्वास का वातावरण निर्मित हो गया तो इन प्रयोगों को अन्य लोगों पर भी दोहराया। बिजली के तारों को छूकर लोग आश्चर्यचकित रह गए। हकीकत राय ने नंगे पांव जमीन पर खड़े होकर यंत्र से निकले बिजली के तारों को शरीर के संवेदनशील अंग जीभ से भी छुलाया। उसे करंट का कोई झटका नहीं लगा। उसने एल्यूमिनियम के एक बड़े भगोने में पानी भरकर एक तार को क्लिप से भगोने में लगा दिया जबकि दूसरे तार से बल्ब जोड़ दिया। फिर वह खुद पानी में खड़ा हो गया और बल्ब वाला तार भगोने से छुला दिया। इस क्रिया से बल्ब तो तेज़ रोशनी फेंकता हुआ जल उठा, लेकिन हकीकत राय करंट से अप्रभावित रहा। भगोने में ही खड़े रहकर हकीकत राय ने प्रदर्शन देख रहे करीब दर्जन भर लोगों से हाथ भी मिलाया।

हकीकत राय ने अपनी खोज की पृष्ठभूमि के बारे में बताया है कि जब एक दशक पहले बिजली के तेज़ करंट से उसकी मां की मौत हो गई थी, तभी से बिजली के करंट पर नियंत्रण के विचार उसके दिमाग में कौंधने लगे थे। चूंकि उसकी आजीविका का साधन बिजली उपकरणों की मरम्मत करना है इसलिए वह विद्युत करंट के गुणधर्मों के बारे में पहले से कुछ समझता भी था। इसलिए मां की मौत के तत्काल बाद हकीकत राय ने अपने स्वप्न को आकार देने की शुरुआत कर दी थी। शुरू में जो यंत्र वजूद में आया उसमें अनेक खामियां थीं। यंत्र का डील-डौल भी ज़्यादा था और वज़न भी। इसके निर्माण में इतना अधिक खर्च आ रहा था कि इस उपकरण को एक आम आदमी द्वारा खरीद लेना मुश्किल था। लेकिन इस सफलता ने उसके लिए नई उम्मीदों के द्वारा खोल दिए और वह नए सिरे से उत्साहपूर्वक काम में जुट गया।

कुछ साल की मेहनत रंग लाई और हकीकत राय अपने सपनों का यंत्र बनाने में सफल हो गया।

इस नौजवान का दावा है कि उसका यह आविष्कार भारत के साथ ही पूरी दुनिया में करंट से किसी इन्सान की मौत नहीं होने देगा। उसे अब ज़रूरत है कि भारत

सरकार उसके इस मौलिक आविष्कार पर गौर कर इसे प्रचलन में लाने की दिशा में उसका प्रोत्साहन करे। इस यंत्र को घर अथवा कारखाने में बिजली की मेन लाइन में लगाने के बाद यंत्र से निकलने वाली 220-230 वोल्ट की बिजली इस तरह से प्रभावहीन हो जाएगी कि कोई उसे जानबूझकर अथवा धोखे से भी नंगे पांव छू ले तो उसे किसी भी तरह का करंट का झटका नहीं लगेगा। यदि ऐसा संभव हो जाता है तो अचानक बिजली के करंट से मरने वाले लोगों की संख्या में काफी कमी आएगी।

हकीकत राय अपने इस उपकरण की विशिष्टता के बारे में बताता है कि एक मर्तबा स्टेबलाइज़र की आउटपुट छू लेने से मौत हो सकती है लेकिन इस यंत्र से निकली आउटपुट को छू लेने से कोई खतरा नहीं होगा। नतीजतन विद्युत उपकरण और व्यक्ति दोनों ही सुरक्षित रहेंगे।

हकीकत राय बहुत ज़्यादा पढ़ा-लिखा नहीं है, न ही उसकी राजनैतिक व प्रशासनिक पहुंच है। इसके बावजूद यह संभावनाशील युवक अपने वैज्ञानिक आविष्कार के बूते अपना लोहा मनवाने की दृष्टि से इस उपकरण का पेटेंट कराने की कोशिश में जुटा है, जिससे उसका फार्मूला पेटेंट हो जाए और उपकरण को बाज़ार में व्यावसायिक स्तर पर उतारा जा सके। फिलहाल उसने अपना आवेदन भारत सरकार को भेजा है जिसका उसे कोई जवाब नहीं मिला है। ***(स्रोत फीचर्स)***

फॉर्म 4 (नियम - 8 देखिए)

मासिक स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के सम्बंध में जानकारी

प्रकाशन	: भोपाल	सम्पादक का नाम	: सुशील जोशी
प्रकाशन की अवधि	: मासिक	राष्ट्रीयता	: भारतीय
प्रकाशक का नाम	: (सी.एन. सुब्रह्मण्यम) निदेशक, एकलव्य	पता	: एकलव्य, ई-7/एच आई जी 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462 016
राष्ट्रीयता	: भारतीय		
पता	: एकलव्य, ई-7/एच आई जी 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462 016	उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है	: (सी.एन. सुब्रह्मण्यम) निदेशक, एकलव्य
मुद्रक का नाम	: (सी.एन. सुब्रह्मण्यम) निदेशक, एकलव्य	राष्ट्रीयता	: भारतीय
राष्ट्रीयता	: भारतीय	पता	: एकलव्य, ई-7/एच आई जी 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462 016
पता	: एकलव्य एकलव्य, ई-7/एच आई जी 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462 016		

मैं सी.एन. सुब्रह्मण्यम, निदेशक, एकलव्य यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

1 जून 2010

सी.एन. सुब्रह्मण्यम,
निदेशक, एकलव्य